International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 89-90

मालवी लोकजीवन में संजा पर्व की अवधारणा एवं महत्व

रूपाली सारये
एम.ए. (हिन्दी), एम. फिल (हिन्दी), नेट, स्लेट, हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

हमारे देश भारतवर्ष की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अनेकता में एकता हैं। पूरे देश की क्या बात करें, जिस मालवा में हम रहते है, उसमें भी हमें विभिन्नता दिखाई देती हैं, कहा जाता है कि यहाँ बारह कोस (24 मील) पर खान–पान, वेशभूषा और बोली में अन्तर दिखाई देता है। इस परिप्रेक्ष्य में जब हम लोकजीवन की बात करते है तो उसमें भी विभिन्नता दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक ही है। मालवा की लोक जीवन का अपने आप में वैशिष्ट्य है। यहाँ की वस्त्रों पर छपाई की कला ने तो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। इस संदर्भ में भेरूगढ़ (उज्जैन), जावद जिला नीमच और बाग जिला धार की वस्त्रों पर छपाई का उदाहरण दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर गृहणियाँ अपने घरों में विभिन्न प्रकार के चित्रांकन करती है। जैसे नांगपंचमी पर नागदेवता, रक्षाबंधन पर श्रवणकुमार, दशहरा, दीपावली के अवसर पर घर आंगन लीप–पोत कर उसे विभिन्न प्रकार के मांडनों से सजाया जाता है। इसी प्रकार विवाहोत्सव अथवा अन्य अवसरों पर घर की बाहरी दीवारों पर चित्रांकन किया जाता है। इस प्रकार का चित्रांकन अत्यन्त चित्ताकर्षक होता है। परन्तु खेद का विषय है कि वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति के इस यग में हमारी लोक जीवन की ये विरासत अब लुप्त होती जा रही है। शहरीकरण के दौर में इस विरासत के दर्शन दुर्लभ हो गए है, हाँ गाँवों में अभी भी इसे देखा जा सकता है और इसे सहेज कर रखने की आवश्यकता है।

'संजा' श्राद्ध पर्व के सोलह दिनों का लोकपर्व है, जो पितरों को समर्पित है। यह पर्व भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर आश्विन कृष्ण अमावस्या तक रहता है। इस अवध में कुंवारी कन्याएँ अपने–अपने घरों की दीवारों पर प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाती है। इसमें सर्वप्रथम जहाँ आकृति बनानी होती है, उसे गोबर से ही बनाया जाता है। आकृति बनाकर उसे गुलतेवड़ी के फूलों से सजाया जाता है। इस पौधे से सफेद, गुलाबी, पीले और लाल रंगों के फूल प्राप्त होते है।

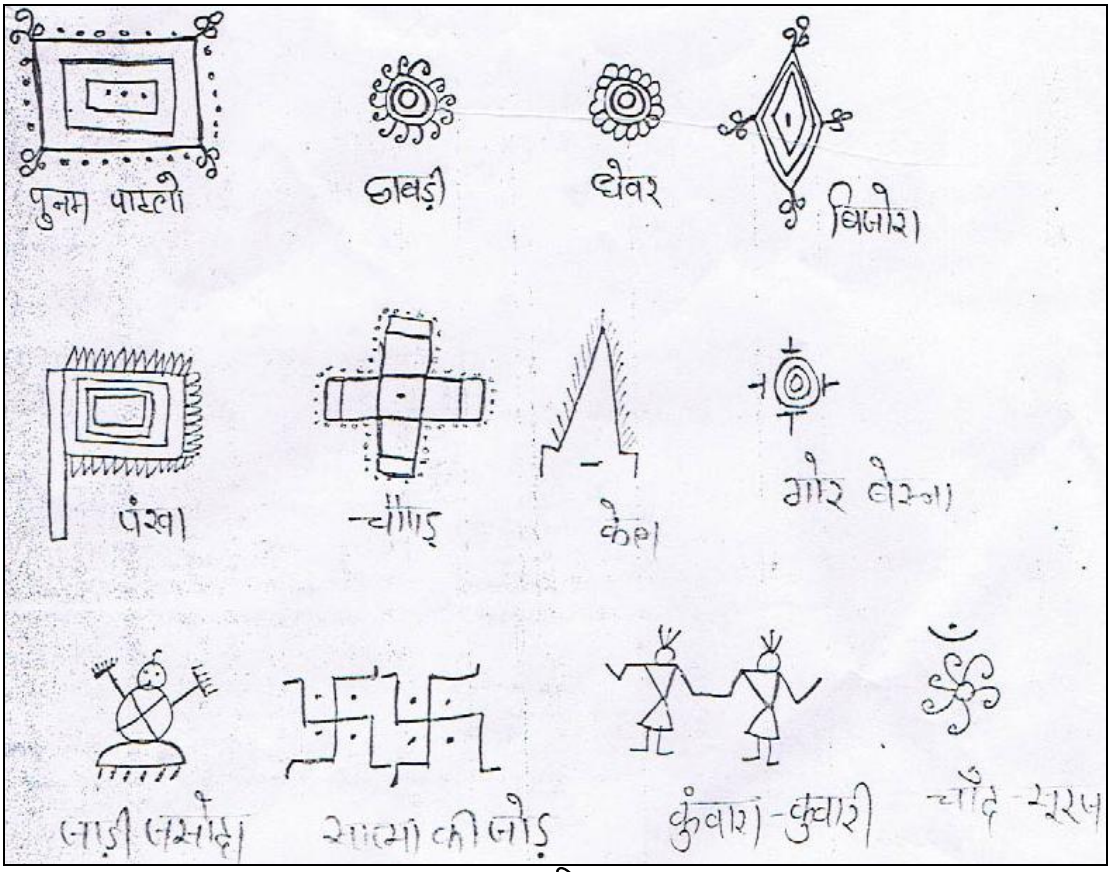

आकृति 1

पूर्णिमा से लेकर चौदस तक जो आकृतियाँ बनाई जाती है, उनका विवरण इस प्रकार है –

पूर्णिमा	–	पाटला
एकम	–	चाँद सूरज
दूज	–	चोपड़
तीज	–	बीजोरा
चतुर्थी	–	छाबड़ी
पंचमी	–	कुंवारा–कुंवारी (5 जोड़े)
छठ	–	जलेबी की जोड़
सप्तमी	–	साथिया
अष्टमी	–	घेवर
नवमी	–	डोकरा–डोकरी (9 जोड़े)
दशमी	–	दिया की जोड़
ग्यारस	–	केल
बारस	–	बान्दरवाल
तेरस	–	छकड़ागाड़ी
चौदस	–	किलाकोट

अमावस्या को किलाकोट ही बना रहता है।
संजा माता बहन–बेटी कहलाती है, जो साल भर में सोलह दिन के लिए पीहर में आती है।
जैसे की श्राद्ध पर्व प्रारम्भ होता है, वैसे ही कुंवारी कन्याएँ संजा बनाना शुरु कर देती है और प्रतिदिन पास–पड़ोस की कन्याएँ एकत्र होकर आरती का थाल सजाकर शाम के समय संजा की आरती करती है। आरती करते समय सभी कन्याएँ गीत भी गाती है। आरती समाप्त होने के पश्चात् प्रसाद का वितरण होता है।
अमावस्या के दिन संजा की विदाई होती है। विदाई के अवसर पर संजा को पूजा का कपड़ा पहनाकर पूजा कर आरती की जाती है। पूजा–आरती के समय धूप भी दी जाती है, इसके बाद सोलह कन्याओं को भोजन करवाकर सोलह वस्तुएँ बांस की एक टोकरी (छबड़ी) में रखकर दी जाती है।

"संजा गीत"

1. छोटी–सी गाड़ी लुढ़कती जाये, जीमें बैठया संजा बाई।
   घाघरो घमकाती जाये, चूडलो चमकाती जाये।
   बाइजी की नथनी झोला खाये।
2. संजा का सासरे जावांगा खाटो रोटी खावांगा।
   संजा की सासू भूखड़ली चटनी रोटी सूथड़ली।
3. संजा तू तो बड़ा बाप की बेटी, तु तो खावे खाजा रोटी।
   ने तू तो पेरे मानक मोती।
4. संजा तू थारा घरे जा, नी तो थारी बाई मारेगी,
   के कूटेगी के डोल में, दचकोडेगी चांद गयो गुजरात,
   हिरनी का बड़ा–बड़ा दांत छोरिया डरपेगी।

प्रस्तुत गीतों को जब कन्याएँ एक स्वर में गाते हुए संजा की आरती करती है तो वह दृश्य आनन्ददायक हो जाता है। इस अवसर पर कन्याओं का उत्साह देखते ही बनता हैं।
डॉ. श्याम परमार ने लोकगीतों के स्वभाव की चर्चा करते हुए लिखा है कि मालवी गीतों में प्रायः शांति और संतोष की भावना देखने को मिलती है।

1. उन्होंने आगे लिखा है कि मालवी गीतों में वीर रस एवं पुरुषत्व भाव का अभाव पाया जाता है।
2. डॉ. परमार ने अपनी पुस्तक में पगलिया की आकृति का रेखाचित्र भी दिया है जो संजा के रेखाचित्रों के समान दिखाई देता है।
3. डॉ. परमार ने संजा के कुछ गीत भी दिये है जो हम नहीं दे पाये थे। उन्होंने जो गीत दिये है वे इस प्रकार है –

   1. जीरो लो बई जीरो लो
   जीरो लइने संजा के दो
   संजा का पीहर सांगा सोल
   परण पधार्या गड़ अजमेर
   राणाजी की चाकरी कल्याणजी की देस
   छोड़ा म्हारी चाकरी पधारो तम्हारा देस

   2. सांजी के औरे धौरे हरी है चौराई
   मो तोय पूछूँ, सांझी के तेरे भाई
   नो दसों का अंजन–मंजन सांजा मेरो भाई

अतः यही कहा जा सकता है कि हमें लोक जीवन के संरक्षण प्रदान करने के लिए निश्चित ही कुछ प्रयास करना चाहिए अन्यथा संस्कृति की यह अनमोल धरोहर लुप्त हो जावेगी।
यह लोकजीवन की अभिव्यक्तियाँ ही है जो जीवन के उन्मुक्त प्रवाह को दर्शाती है। जहाँ रचनात्मकता से जीवन में नवीन विचारों का संचार होता है वहीं कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उल्लास प्रदान करने की चेष्टा ज्ञात होती है। हम अपने भावों के सुख–दुःख का संचार साधारणतया नहीं कर पाते। ऐसी परिस्थितियों में यह लोकाभिव्यक्तियाँ का सहारा अंर्तमन के भाव स्वतः ही प्रकट कर देता है और मन को आत्म शांति प्राप्त होती है।

संदर्भ

1. डॉ श्याम परमार – मालवी लोक साहित्य, पृ. 101
2. डॉ श्याम परमार – मालवी लोक साहित्य, पृ. 108.
3. डॉ श्याम परमार – मालवी लोक साहित्य, पृ. 159, 161 व 168.